ए वचन श्रवणे सुणी, कांई मनडां थयां अति भंग।
वाला एम तमे अमने कां कहो, अमे नहीं रे खमाय अंग।।५३ ।।

ऐसे प्यार-लाड के वचन सुनकर सखियों के दुःख से भरे मन को शान्ति मिली। वह बोलीं कि हे वालाजी! आप हमसे ऐसा क्यों कहते हो? हममें सहन करने की शक्ति नहीं है।

कलकलती कंपमान थैयो, कांई ततखिण पडियो तेह।
आवीने उछरंगे लीधियो, कांई तरत वाध्यो सनेह।।५४ ।।

बिलखती हुई, कांपती हुई सखियां फिर से गिर पड़ीं और फिर वालाजी ने उन्हें प्यार से उठाया जिससे प्यार और बढ़ गया।

आंखडिए आंसू ढालियां, तमे कां करो चितनो भंग।
आंसूडां लोऊं तमतणां, आपण करसूं अति घणू रंग।।५५ ।।

सखियों की आंखों से आंसू बहते हैं। वालाजी उन आंसुओं को पोंछते हैं और कहते हैं कि तुम इतना दुःखी क्यों हो रही हो? अभी हम आनन्द की लीला करेंगे।

सखियो पूरूं मनोरथ तमतणां, कांई करसूं ते रंग विलास।
करवा रामत अति घणी, में जोयूं मायानो पास।।५६ ।।

वालाजी सखियों से कहते हैं कि हम तुम्हारी मनोकामना पूरी करेंगे और अति आनन्द की लीला करेंगे। आनन्द की रामत खेलने के लिए ही मैंने देखा था कि तुम्हारे अन्दर माया है या नहीं।

सखियो वृन्दावन देखाडूं तमने, चालो रंग भर रमिए रास।
विविध पेरेनी रामतो, आपण करसूं माहों मांहें हांस।।५७ ।।

हे सखियो! चलो वृन्दावन दिखावें और आनन्द भरी रास की रामतें खेलें। तरह-तरह की रामतें खेलकर हम आपस में हंसेंगे।

तमे प्राणपे मूने वालियो, जेम कहो करूं हूं तेम।
रखे कोई मनमां दुख करो, कांई तमे मारा जीवन।।५८ ।।

वालाजी कहते हैं, सखियो! तुम मुझे प्राणों से भी प्यारी हो। तुम जैसा कहो मैं वैसा करूं। मन में किसी प्रकार का दुःख मत लाओ। तुम तो मेरे जीवन हो।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ३७५ ।।

वृंदावनदेखाड्यूं छे

राग धनाश्री

जीवन सखी वृंदावन रंग जोइएजी, जोइए अनेक रंग अपार।
विगते वन देखाडूं तमने, मारा सुन्दरसाथ आधार।।१ ।।

वालाजी कहते हैं, सखी! चलो वृन्दावन देखें और आनन्द का अनुभव करें। तुमको अच्छी तरह से वन की सैर कराता हूं। तुम मेरे प्राणों के आधार सुन्दरसाथ हो।

आंबा आंबलियो ने आसोपालव, अंजीर ने अखोड।
अननास ने आंबलियो दीसे, चारोली चंपा छोड।।२ ।।

आम, इमली, अशोक, अंजीर, अखरोट, अन्नानास, चारोली (चिरौंजी) और चम्पा के पेड़ देखो।

Nijanand App

साग सीसम ने सेमला सरगू, सरस ने सोपारी।
सूफ सूकड ने साजडिया, अगर ऊंचो अति भारी।। ३ ।।

सागौन, शीशम, सेमला (सिमली), सरगू (सुआंजना), मूंगा और सुपारी के पेड़ अति सुन्दर हैं। सौंफ (वरयारी), चन्दन साज का पेड़ और ऊंचा अगर का पेड़ देखा है?

वड पीपल ने वांस वेकला, बोलसरी ने वरणा जी।
केवडी केल कपूर कसूंबों, केसर झाड अति घणा जी।। ४ ।।

बट, पीपल, बांस, वेकल, मौलिश्री कई किस्म की हैं—केवड़ा, केला, कपूर, कसंबी (अफीम का फूल), केसर, आदि के झाड़ बहुत ज्यादा हैं।

मेहेदी नेवरी ने मलियागर, दाडम डोडंगी ने द्राख।
बीयो बदाम ने बीली बिजोरो, रुद्राख ने भद्राख।। ५ ।।

वहां मेंहदी, दालचीनी (तज) अनार, अंगूर हैं और बादाम, बेल, बिजौरा, रुद्राक्ष और भद्राक्ष के वृक्ष हैं।

पीपली पारस ने पारजातक, साले ने सीसोटा जी।
फणस तूत ने तीन तेवरियां, ताड छे अति मोटा जी।। ६ ।।

पीपल, पारस, कल्पवृक्ष, साल, सीसौटा, कटहल, शहतूत, तेवरिया (अरहर) और ताड़ के बहुत ऊंचे-ऊंचे वृक्ष हैं।

रायण रोइण ने रामण रायसण, लिंबडा लिंबोई लवंग।
तज तलसी ने आदू एलची, वाले अति सुगंध।। ७ ।।

वहां कई प्रकार के फल—रायण (खिन्नी), रोइण, रामण, रायसन, नीम, नींबू और लवंग के वृक्ष हैं। तेजपात, तुलसी, अदरक, इलायची, आदि के पौधे अति सुगन्ध वाले हैं।

केवडो काथो ने कपूर काचली, भरणी ने भारंगी।
सेवण सेरडी सूरण सिगोंटी, नालियरी ने नारंगी।। ८ ।।

केवड़ा, काथा, कपूर, काचली, भरणी और भारंगी के पेड़ हैं। सेवण, गन्ना, सूरण, सिगोटी, नारियल और सन्तरा के भी पेड़ हैं।

अरणी ऊंमर वेहेडा दीसे, जांबू ने वली जाल।
गूंदी गूंदा गुंगल गंगोटी, गहुला ने गिरमाल।। ९ ।।

अरणी, गूलर, बहेड़ा, जामुन और जाल के वृक्ष दिखाई देते हैं। गूंदी, गूंदा, गुंगल, गगोटी, गहुला और गिरमाल के पेड़ हैं।

उंवरो अगथिया ने आंबलियो, अकलकरो अमृत जी।
करमदी ने कगर करंजी, कदम छे अदभुत जी।। १० ।।

ऊंवरो, अगस्त, इमली, आंवला, अकलकरा, जो अमृत के समान लाभदायक हैं, करमदी (करौंदा, डेले) कगर, करंजी, और कदम्ब के पेड़ अति सुन्दर हैं।

Nijanand App

बूंद बकान ने कोठ करपटा, निगोड ने वली नेत्र।
मरी पानरी ने वली मरुओ, अकोल ने आंकसेत्र।। ११ ।।

बूंद, बकैन, कोट, करपटा, निओड और फिर नेत्र को देखो। काली मिर्च, पानरी, महुआ, आक, आदि के अति कड़वे पेड़ हैं।

कमलकाकडी ने झाड चीभडी, बोरडी ने वली बहेडा।
हिरवण हीमज हरडे मोटी, मोहोला ने वली महूडा।। १२ ।।

कमल गट्टा, चिभड (चीभडी), खरबूजा, मतीरा की बेलें हैं तथा बेरी-बहेड़ा, आदि तथा हरड़, महुआ वगैरह के पेड़ दिखाई देते हैं।

धामणा धावडी ने वरीयाली, सफल जल भोज पत्र।
खसखस फूल दीसे एक जुगते, छोत्रा ऊपर छत्र।। १३ ।।

धामणा, धावडी, सौंफ, भोजपत्र, खस-खस के फूल छत्रों के समान बिछे दिखाई देते हैं।

माया मस्तकी ने वरस बडबोहोनी, सकरकंद संदेसर।
करोड भरोड ने पलासी, अकथ ने आक सुन्दर।। १४ ।।

मनमोहक और मोहबे के बड़े-बड़े वृक्ष तथा शकरकन्द, संदेसर, करोड, भरोड, पलाश, अकथ तथा आक के पेड़ अति सुन्दर हैं।

टेवरू कुंदरू ने कबोई, कांकसी ने कलूंब।
खेजड खजूरी ने खाखरा दीसे, केसू तणी अति लूंब।। १५ ।।

टेवरू, कुंदरू (गिलौड़ा), कबोई, कांकसी, कलूभ, खेजड़, खजूर, खाखर (छयोला), केसुडा तथा केसू के फूल लटकते दीख रहे हैं।

परवती परवाली ने पाडर, पान वेल अति सार।
आल अकोल ने बेर उपलेटा, दुधेला ने देवदार।। १६ ।।

परवती, परवाली और पाडर पान की बेलें अति सुन्दर हैं। आल अकोट, उपलेटा, दुधेला और देवदार के वृक्ष हैं।

चंबेली ने चनी चणोठी, चंद्रवंसी चोली ने चीभडी।
गलकी ने गिसोटी गोटा, गुलबांस ने गुलपरी।। १७ ।।

चमेली, चनी, चनोटी, काले-लाल फूल, चन्द्रवंशी, चोली, चीभडी, घीयातोरी, गिसोटी, गोटा, गुलबांस और गुलपरी के पेड़ हैं।

जाई जुई ने जासू जायफल, जाए ने जावंत्री।
सूरजवंसी ने सणगोटी, सूआ ने सेवंत्री।। १८ ।।

जाई, जुई, जासू, जायफल, जाए, जावित्री, सूरजवंशी, सणगोटी, सूआ और सेवंत्री इन सब फूलों के अति सुन्दर पौधे दीख रहे हैं।

Nijanand App

कोली कालंगी ने कारेली, तुंबडी ने तडबूची।
कोठवडी ने चनकचीभडी, टिंडुरी ने खडबूची।। १९ ।।

कोली, कालंगी, करेले (कारेली) की बेल, तोरई, तरबूज और खरबूज, कोठवडी, चनक, चीभडी-टिडोरा की कई बेलें हैं।

गुलाबी ने कफी डोलरिया, दूधेली ने दोफारी।
कमल फूल ने कनीयल केतकी, मोगरेमां झरमरी।। २० ।।

गुलाबी और कफी दूधेलू और दोफारी, कमल फूल और कनीयल केतकी व मोगरा की कलियां दिखाई देती हैं।

ओलिया वालोलिया ने परवालिया, इसक फाग वेल सार।
आरिया तो अति उत्तम दीसे, जाणे कलंगे रंग प्रतकाल।। २१ ।।

औलिया, वालोलिया और परवालिया तथा प्रेम बेल (लाजवन्ती) बड़ी सुन्दर है, आरिया तो इतना सुन्दर है, मानो पेठे के ऊपर कलंगी लगी हो।

सहेस्त्र पांखडीनो दमणो दीसे, सोवरण फूली मकरंद।
वन सिणगार कीधो वेलडिए, जुजवी जुगतनां रंग।। २२ ।।

हजार पांखड़ी का गेंदा, सोने के रंग का मकरन्द फूल खिला है। बेलों के तरह-तरह के फूलों ने वन को सजा दिया है।

साक फल अंन अनेक विधना, कंदमूल मांहें सार।
सारा स्वाद जुजवी जुगतना, वन फलियां रे अपार।। २३ ।।

सब्जी और फल हैं। विविध प्रकार के कन्दमूल हैं। सब अच्छे स्वाद वाले हैं और अति शोभायमान हैं।

वन ऊपर वेलडियो चढियो, जो जो ते आ निकुंज।
मन्दिरना जेम जुगतें दीसे, मांहें अनेक विधना रंग।। २४ ।।

पेड़ों को बेलों ने इस तरह ढक लिया है जैसे फूलों का महल बन गया हो। वह एक सुन्दर मकान की तरह दीखता है, जिसमें कई तरह के रंग हैं।

बृध आडी तरवर नी डालो, जुगते वन कुलंभ।
भोम ऊपर ऊभा फल लीजे, एम केटली कहूं एह सनंध।। २५ ।।

पेड़ों की लम्बी डालियां एक-दूसरे के ऊपर आई हैं, जिससे वन और भी सुन्दर दीखता है। भूमि पर खड़े होकर फल तोड़ सकते हैं। इसकी कितनी हकीकत का बयान करें?

बीजी विध विधनी वनस्पती मौरी, केटला लऊं तेना नाम।
जमुनाजीना त्रट घणूं रूडा, रूडा मोहोल बेसवा ना ठाम।। २६ ।।

दूसरी और तरह-तरह की वनस्पति के फूल खिले हैं। उनके नाम कहां तक गिनाऊं यमुनाजी का किनारा बहुत सुन्दर है। फूलों से बने मकान तथा बैठने की जगह बनी है।

बेहू कांठे वनस्पती दीसे, झलूबे ऊपर जल।
नेहेचल रंग सदा विध विधना, ए वन छे अविचल।। २७ ।।

यमुनाजी के दोनों किनारे वन की डाली से ढके हैं। इनकी डालें पानी के ऊपर लटक रही हैं। यह वन अखण्ड है और यहां सब आनन्द भी अखण्ड है।

Nijanand App

कांठे जल ऊपर वेलडियो, तेमां रंग अनेक।
फूलडे जल छाह्युं छे जुगते, विध विधना विसेक।। २८ ।।

यमुनाजी के जल के किनारे पर वृक्षों पर बेलें छाई हैं, जिनमें अनेक रंग हैं और तरह-तरह की शोभा है।

जमुनाजीना जल जोरावर, मध्य वहे छे नीर।
वेहेतां जल वले रे खजूरिया, दरपण रंग जाणो खीर।। २९ ।।

यमुनाजी के जल का बहाव बीच में तेज है। बहते हुए जल में भंवरियां (भंवर) पड़ती हैं। जल दर्पण के समान निर्मल है।

वृंदावन फूल्यूं बहु फूलडे, सोभा धरे अपार।
वन फल उत्तम अति घणूं ऊंचा, कुसम तणा वेहेकार।। ३० ।।

वृन्दावन में बेशुमार फूल खिले हैं, जिनकी शोभा अपरम्पार है। अच्छी प्रकार फल भी लगे हैं। इनके फूलों और फलों की सुगन्ध आती है।

रेत सेत सोभा धरे, वृंदावन मंझार।
सकल कलानो चंद्रमा, तेज धरा धरे अपार।। ३१ ।।

वृन्दावन के बीच में सफेद रेती की सुन्दर शोभा है। पूर्ण चन्द्रमा सम्पूर्ण कला के साथ धरती को बेशुमार रोशनी दे रहा है।

गूंजे भमरा स्वर कोयलना, घूमे कपोत चकोर।
सूडा बपैया ने वली तिमरा, रमे ते वांदर मोर।। ३२ ।।

भंवरे गूंजते हैं। कोयल कू-कू कर रही है। कबूतर और चकोर पक्षी घूम रहे हैं। तोता, पपीहा तथा झींगुर आवाज कर रहे हैं। बन्दर और मोर खेल रहे हैं।

मांहें ते मृग कस्तूरिया, प्रेमल करे अपार।
बीजा अनेक विधना पसु पंखी, ते रमे रामत अति सार।। ३३ ।।

वन के बीच में कस्तूरी मृग सुगन्ध बिखेर रहे हैं। और अनेक प्रकार के पशु-पक्षी हैं, जो खेल खेल रहे हैं।

छूटक थड ने घाटी छाया, रमवाना ठाम अति सार।
इंद्रावतीबाई अति उछरंगे, आयत करे अपार।। ३४ ।।

पेड़ थोड़ी-थोड़ी दूरी पर लगे हैं और उनकी छाया घनी है। वहां खेलने की सुन्दर जगह बन गई है। श्री इन्द्रावतीजी इस स्थान पर खेलने की अत्यधिक चाहना करती हैं।

आरोग्यां वन फल स्वादे, जल जमुना त्रट सार।
वृंदावन वाले जुगतें देखाड्यूं, आगल रही आधार।। ३५ ।।

यमुनाजी के जल के सुन्दर किनारे पर वन फल बड़े स्वाद से खाया तथा वालाजी ने मार्गदर्शक बनकर वृन्दावन को अच्छी तरह दिखाया।

Nijanand App

एह सरूपने एह वृंदावन, ए जमुना त्रट सार।
घरथी तीत ब्रह्मांडथी अलगो, ते तारतमे कीधो निरधार।। ३६ ।।

सखियों तथा वालाजी के यह सुन्दर स्वरूप और यह सुन्दर वृन्दावन तथा यमुनाजी का सुन्दर किनारा इस ब्रह्माण्ड में नहीं हैं और परमधाम से भी अलग हैं। यह ब्यौरा (विवरण) तारतम ज्ञान से श्री राजजी महाराज ने बताया है।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ४११ ॥

रामत पेहेली–राग कालेरो

वाले वेख लीधो रलियामणो, कांई करसूं रंग विलास।
आयत छे कांई अति घणी, वालो पूरसे आपणी आस।
सखीरे हम चडी। १ ।।

वालाजी ने सुन्दर आकर्षक स्वरूप धारण किया है। अब इनके साथ आनन्द की रामत खेलेंगे। हमारी बहुत चाहना है जिसे वालाजी पूर्ण करेंगे। सखियों के अन्दर आनन्द और जोश भरा है।

वृंदावन तो जुगते जोयूं, स्याम स्यामाजी साथ।
रामत करसूं नव नवी, कांई रंग भर रमसूं रास।। २ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि श्यामा श्याम के साथ वृन्दावन अच्छी तरह देख लिया है। अब हम नई-नई रामतें आनन्द में विभोर होकर खेलेंगे।

सखी मांहों मांहें वात करे, आज अमे थया रलियात।
वेख निरखीने नेत्र ठरे, आज करसूं रामत निघात।। ३ ।।

सखियां आपस में बात करती हैं कि आज हम धन्य-धन्य हो गई हैं। वालाजी का लुभावना भेष देखकर हमारे नेत्र सन्तुष्ट हो रहे हैं। आज वालाजी के साथ बहुत रामतें खेलेंगे।

वेख नवानो वागो पेहेर्यो, तेड्या वृंदावन।
मस्तक मुकट सोहामणो, वेख ल्याव्या अनूपम।। ४ ।।

वालाजी ने नए वस्त्र धारण किए हैं। सिर पर मुकुट धारण कर लुभावना भेष बनाकर हमको बुलाया है।

भली भांतना भूखण पेहेरया, वेण रसालज वाय।
साथ सकलमां आवीने ऊभो, करसूं रामत उछाय।। ५ ।।

वालाजी ने अति सुन्दर आभूषण पहने हैं। मधुर बांसुरी बजाते हैं, सब सखियों के बीच आकर खड़े हैं। अब हम उनसे उमंग भरी रामतें खेलेंगे।

तेवा भूखण ने तेवो वागो, नटवरनो लीधो वेख।
घणां दिवस रामत कीधी, पण आज थासे वसेख।। ६ ।।

जैसे सुन्दर आभूषण हैं वैसे ही सुन्दर वस्त्र धारण कर नाचने का भेष बनाया है। ब्रज में बहुत दिन खेल खेले, परन्तु आज विशेष खेल खेलेंगे।

रास रमवाने वालेजी अमारे, आज कीधो उछरंग।
नेंणे जोई जोई नेह उपजावे, वारी जाऊं मुखारने विंद।। ७ ।।

रास खेलने के लिए वालाजी मन में उमंग लेकर हमें बार-बार देखकर हमारे अन्दर प्रेम पैदा करते हैं। ऐसे मनमोहक मुख को देखकर मैं बलि-बलि जाती हूं।

Nijanand App